International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

CERTIFICATE NO : ICIRSMEH /2025/C1025716

पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन

Abhilasha Chourasia

Research Scholar, Department of Sociology, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

सारांश

यह अध्ययन पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की बदलती जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक समय में परिवार न केवल सामाजिकरण का प्राथमिक आधार है बल्कि युवाओं के मूल्यबोध, निर्णय-क्षमता, शिक्षा, करियर, संबंध, स्वास्थ्य तथा सामाजिक आचरण को आकार देने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व भी है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि माता–पिता का व्यवहार, पारिवारिक संवाद, अनुशासन, भावनात्मक सहयोग, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक संरचना तथा संस्कृति युवाओं की जीवनशैली को किस प्रकार प्रभावित करती है। पनागर और सिहोरा जैसे अर्ध-शहरी एवं ग्रामीण मिश्रित क्षेत्रों में पारिवारिक अपेक्षाएँ, परंपराएँ, सामूहिकता और सामाजिक दबाव युवाओं के व्यवहार को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं।

मुख्यशब्द- पनागर एवं सिहोरा तहसील, युवाओं की जीवनशैली, पारिवारिक व्यवहार, निर्णय-क्षमता, सामाजिक आचरण

प्रस्तावना

युवाओं की जीवनशैली किसी भी समाज की उन्नति, सक्रियता और परिवर्तनशीलता का सबसे सशक्त संकेतक मानी जाती है। आधुनिक भारत में सामाजिक ढांचे, आर्थिक नीतियों, तकनीकी विकास, शिक्षा के अवसरों और सांस्कृतिक प्रभावों ने युवाओं के जीवन में गहरे परिवर्तन लाए हैं। इन परिवर्तनों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि परिवार—जो समाज का सबसे छोटा और सबसे महत्वपूर्ण संस्थान है—उसकी भूमिका और व्यवहार का विश्लेषण किया जाए। विशेषकर पनागर एवं सिहोरा तहसील जैसे क्षेत्रों में, जहाँ परंपरागत और आधुनिक जीवन मूल्यों का संतुलन दिखाई देता है, पारिवारिक व्यवहार का प्रभाव युवाओं की जीवनशैली को दिशा देने में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

परिवार व्यक्ति के प्रारंभिक अनुभवों, मूल्य प्रणाली, सामाजिक नियमों और व्यवहारिक पैटर्न को निर्धारित करता है। माता–पिता का व्यवहार, परिवार की संरचना, बच्चों के प्रति भावनात्मक उपलब्धता, संवाद का स्वरूप, निर्णय लेने में सहभागिता और अनुशासन की पद्धति युवाओं के संपूर्ण व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालती है। ये कारक यह भी तय करते हैं कि युवा तनाव का सामना कैसे करेगा, सामाजिक संबंध कैसे बनाएगा, शिक्षा और करियर की दिशा कैसे तय करेगा तथा स्वास्थ्य संबंधी आदतें कैसी होंगी। पनागर एवं सिहोरा तहसील के संदर्भ में यह विषय और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इन क्षेत्रों में अब भी संयुक्त

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

परिवारों की उपस्थिति, पारिवारिक परंपराओं का प्रभाव, आर्थिक विषमताएँ और ग्रामीण–अर्धशहरी सामाजिक ढाँचा युवाओं की जीवनशैली को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। आज के समय में युवा शिक्षित, तकनीकी रूप से जागरूक और आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर हैं, लेकिन पारिवारिक अपेक्षाएँ, पालन–पोषण की शैली, आर्थिक परिस्थितियाँ और सामाजिक दबाव उनकी पसंद–नापसंद, व्यवहार, आकांक्षाएँ और जीवनशैली का आधार बनते हैं। कई परिवारों में संवाद का अभाव, अत्यधिक नियंत्रण या पारिवारिक विवाद युवाओं में तनाव, भ्रम या अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देते हैं। दूसरी ओर कुछ परिवार अपनी संतुलित, सहयोगात्मक और खुली सोच के माध्यम से युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास, सुरक्षित वातावरण और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं, जिससे वे स्वस्थ्य जीवनशैली, सकारात्मक आदतों और सुनियोजित करियर विकास की दिशा में अग्रसर होते हैं।

परिवार का व्यवहार युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्थिरता और सामाजिक जुड़ाव के लिए भी एक निर्णायक कारक है। यदि परिवार में सम्मान, विश्वास, संवाद और सहयोग का वातावरण होता है, तो युवा चुनौतियों का सामना अधिक आत्मविश्वास से करता है, निर्णय क्षमता मजबूत होती है तथा वह नकारात्मक प्रभावों—जैसे नशे, असामाजिक गतिविधियों या गलत संगति—से दूर रहता है। वहीं नकारात्मक पारिवारिक व्यवहार जैसे उपेक्षा, भावनात्मक दूरी, कठोर अनुशासन या निरंतर संघर्ष युवाओं को मानसिक तनाव, असुरक्षा और गलत जीवनशैली की ओर ले जा सकता है।

पनागर एवं सिहोरा तहसील की सामाजिक संरचना यह दर्शाती है कि युवाओं के जीवन में परिवार अभी भी प्राथमिक मार्गदर्शक, नियंत्रक और सहयोगी की भूमिका निभाता है। यहाँ के युवा आधुनिक शिक्षा, डिजिटल तकनीक, सोशल मीडिया और शहरी संस्कृति के प्रभाव से भले ही परिवर्तन की ओर बढ़ रहे हों, किंतु परिवार की अपेक्षाएँ, मूल्य, परंपराएँ और व्यवहार उन्हें आधार प्रदान करते हैं। इसलिए इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि इन क्षेत्रों के युवाओं की जीवनशैली—जैसे उनकी शिक्षा, करियर आकांक्षाएँ, स्वास्थ्य आदतें, सामाजिक संबंध, पहनावा, विचारधारा, मनोरंजन और डिजिटल उपयोग—पर पारिवारिक व्यवहार किस प्रकार प्रभाव डालता है।

आज का परिवार दोहरी चुनौतियों का सामना कर रहा है—एक ओर आर्थिक दबाव, बेरोजगारी, जीवनशैली का तेजी से बदलता पैटर्न और बढ़ती प्रतिस्पर्धा; दूसरी ओर बच्चों की आकांक्षाएँ, स्वतंत्रता की इच्छा और सामाजिक प्रभाव। इन परिस्थितियों में परिवार का व्यवहार संतुलित होना आवश्यक है ताकि युवा अपनी पहचान, कौशल और भविष्य का निर्माण स्वस्थ रूप से कर सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन

अध्ययन की परिकल्पना

एच1. पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

शोध विधि

"पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन" विषयक शोध कार्य में वर्णनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य युवाओं की जीवनशैली में हो रहे परिवर्तनों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना है। अध्ययन के अंतर्गत जबलपुर जिले के पनागर एवं सिहोरा तहसील को चुना गया है।

न्यादर्शन

विषयक शोध में न्यादर्शन से आशय उन समस्त व्यक्तियों से है, जिनसे इस अध्ययन में अपेक्षित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस शोध में जनसंख्या का दायरा जबलपुर जिले के पनागर एवं सिहोरा तहसील तक सीमित रखा गया है। अध्ययन में शामिल जनसंख्या में कुल 553 युवाओं को शामिल किया गया है।

डेटा संग्रहण

प्राथमिक डेटा के संकलन के लिए शोधकर्ता ने प्रश्नावली, साक्षात्कार और प्रत्यक्ष प्रेक्षण विधियों का प्रयोग किया। और द्वितीयक आंकड़े पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, सरकारी रिपोर्ट्स, जनगणना आंकड़ों, शोध पत्रों और इंटरनेट स्रोतों से एकत्रित किए गए।

सांख्यिकीय तकनीक

शोध अध्ययन में निम्न लिखित सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया है-

- टी-टेस्ट
- मीन
- एसडी
- एनोवा

विश्लेषण और व्याख्या

व्यक्तिगत जानकारी

लिंग

तालिका-1 लिंग का प्रकार

लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत दर
पुरुष	340	61.47%
महिला	213	38.53%
कुल	**553**	**100**

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

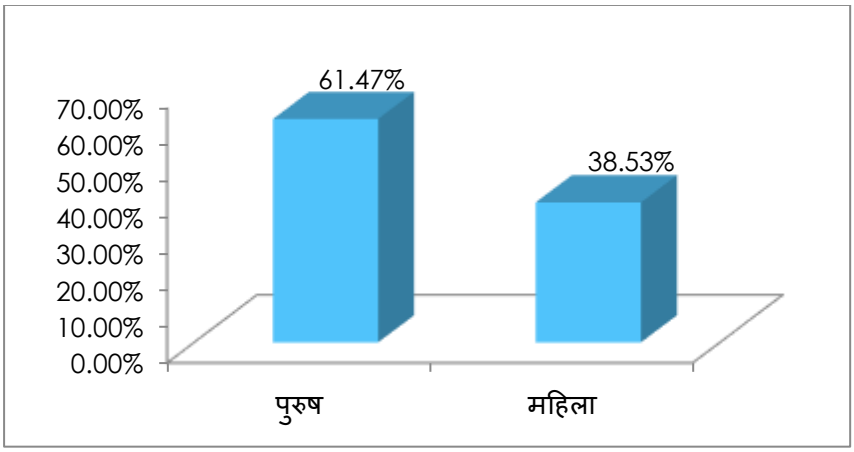

चित्र-1 लिंग का प्रकार

तालिका-1 "लिंग का प्रकार" के अंतर्गत शोध में शामिल प्रतिभागियों के लिंग आधारित वितरण को दर्शाया गया है। इस तालिका के अनुसार कुल 553 उत्तरदाताओं में से 340 पुरुष थे, जो कुल प्रतिभागियों का 61.47 प्रतिशत हैं। वहीं, 213 महिलाएं इस अध्ययन में शामिल थीं, जो कुल संख्या का 38.53 प्रतिशत हैं। यह आँकड़ा स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अध्ययन में पुरुष प्रतिभागियों की संख्या महिला प्रतिभागियों की तुलना में कहीं अधिक है।

आयु

तालिका-2 युवाओं की आयु सीमा

आयु	आवृत्ति	प्रतिशत दर
15–18 वर्ष	80	14.47%
19–22 वर्ष	120	21.70%
23–26 वर्ष	220	39.78%
27–29 वर्ष	133	24.05%
कुल	**553**	**100**

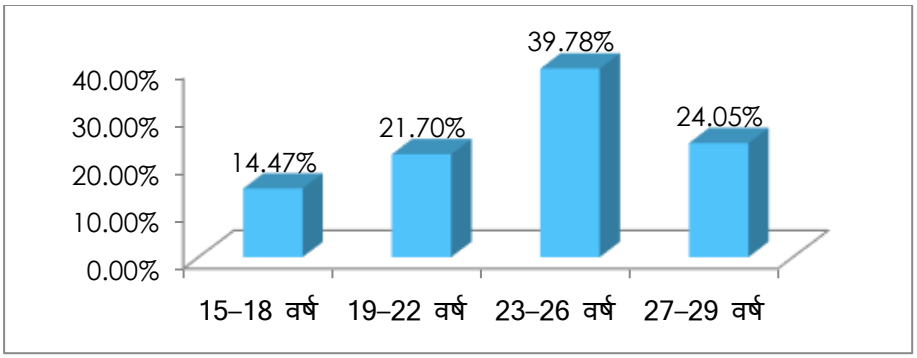

चित्र-2 युवाओं की आयु सीमा

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

तालिका-2 में युवाओं की आयु सीमा के आधार पर उनकी संख्या (आवृत्ति) और प्रतिशत दर का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह तालिका चार आयु वर्गों में विभाजित है: 15-18 वर्ष, 19-22 वर्ष, 23-26 वर्ष, और 27-29 वर्ष।

प्रथम आयु वर्ग 15 से 18 वर्ष के युवाओं की संख्या 80 है, जो कुल प्रतिभागियों का 14.47 प्रतिशत है। यह समूह किशोरावस्था की अंतिम अवस्था को दर्शाता है, जहां युवा शिक्षा और करियर के शुरुआती चरण में होते हैं। दूसरा आयु वर्ग 19 से 22 वर्ष के युवाओं का है, जिनकी संख्या 120 है, जो 21.70 प्रतिशत के बराबर है। इस वर्ग के युवा प्रायः उच्च शिक्षा या रोजगार की तलाश में रहते हैं। तीसरा आयु वर्ग 23 से 26 वर्ष के बीच का है, जो सर्वाधिक प्रमुख समूह है। इसमें 220 प्रतिभागी सम्मिलित हैं, जो कुल का 39.78 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। यह आयु वर्ग युवा अवस्था का सक्रिय चरण माना जाता है, जिसमें अधिकांश युवा शिक्षा पूर्ण कर कार्यक्षेत्र में प्रवेश कर चुके होते हैं या जीवन के निर्णयात्मक मोड़ पर होते हैं। अंतिम आयु वर्ग 27 से 29 वर्ष का है, जिसमें 133 प्रतिभागी शामिल हैं। यह समूह कुल का 24.05 प्रतिशत है। यह वह अवस्था होती है जहां युवा अपने करियर को स्थापित कर रहे होते हैं और पारिवारिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों की ओर अग्रसर होते हैं। इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक भागीदारी 23-26 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की रही, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस शोध या सर्वेक्षण में भाग लेने वाले अधिकांश युवा जीवन के सक्रिय एवं उत्तरदायित्वपूर्ण चरण में हैं। इसके बाद 27-29 वर्ष और फिर 19-22 वर्ष आयु वर्ग के युवा आते हैं, जबकि सबसे कम संख्या 15-18 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं की है। यह वितरण आयु के आधार पर युवाओं की भागीदारी, प्राथमिकता और सक्रियता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

पारिवारिक व्यवहार का प्रभाव

तालिका-3 युवाओं के जीवन के निर्णयों में परिवार की भागीदारी

परिवार की भागीदारी	आवृत्ति	प्रतिशत दर
पूर्ण रूप से	203	36.72%
आंशिक रूप से	160	28.93%
बहुत कम	110	19.89%
बिल्कुल नहीं	80	14.47%
कुल	**553**	**100**

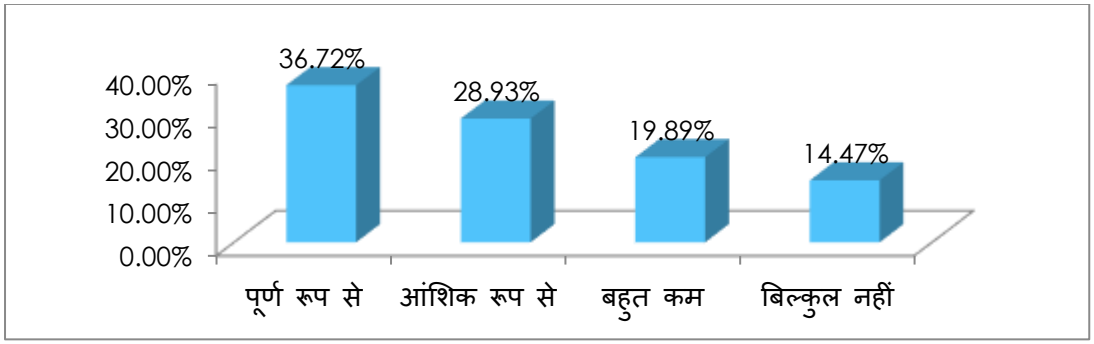

चित्र-3 युवाओं के जीवन के निर्णयों में परिवार की भागीदारी

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

तालिका-3 के आंकड़ों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जबलपुर जिले के पनागर एवं सिहोरा तहसीलों के युवाओं के जीवन के निर्णयों में उनके परिवार की भागीदारी किस स्तर तक है। यह तालिका पारिवारिक प्रभाव के चार स्तरों पूर्ण रूप से, आंशिक रूप से, बहुत कम और बिल्कुल नहीं को उजागर करती है। सबसे अधिक 203 युवा, अर्थात 36.72 प्रतिशत, ने बताया कि उनके जीवन के निर्णयों में परिवार की पूर्ण रूप से भागीदारी होती है। यह आंकड़ा यह स्पष्ट करता है कि आज भी भारतीय समाज में परिवार, विशेषकर माता-पिता, युवाओं के जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णयों जैसे शिक्षा, करियर, विवाह आदि में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। यह पारंपरिक पारिवारिक संरचना और मूल्य व्यवस्था की प्रासंगिकता को दर्शाता है। 160 युवा (28.93 प्रतिशत) ने बताया कि परिवार आंशिक रूप से उनके निर्णयों में भागीदार है। इसका अर्थ यह है कि युवा स्वतंत्र रूप से सोचते हैं, लेकिन परामर्श या मार्गदर्शन के लिए वे परिवार की राय को भी महत्व देते हैं। यह आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन का संकेत है। 110 युवा, यानी 19.89 प्रतिशत, ने कहा कि उनके निर्णयों में परिवार की बहुत कम भागीदारी होती है। यह वर्ग अधिक स्वतंत्र सोच रखने वाला है और अपने फैसलों में आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देता है, भले ही कभी-कभी पारिवारिक मत को सुना जाए। अंततः, 80 युवा (14.47 प्रतिशत) ने बताया कि उनके जीवन के निर्णयों में परिवार की बिल्कुल भी भागीदारी नहीं होती। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि कुछ युवा पूरी तरह से आत्मनिर्भर बन चुके हैं या परिवार से भावनात्मक या विचारधारा के स्तर पर दूरी बना चुके हैं।

परिवार आपके जीवनशैली को किस रूप में प्रभावित करता है

तालिका-4 युवाओं की जीवनशैली को परिवार किस रूप में प्रभावित करता है

युवाओं की जीवनशैली	आवृत्ति	प्रतिशत दर
सकारात्मक रूप से	213	38.52%
नकारात्मक रूप से	150	27.13%
दोनों रूपों में	120	21.70%
प्रभावहीन	70	12.66%
कुल	**553**	**100**

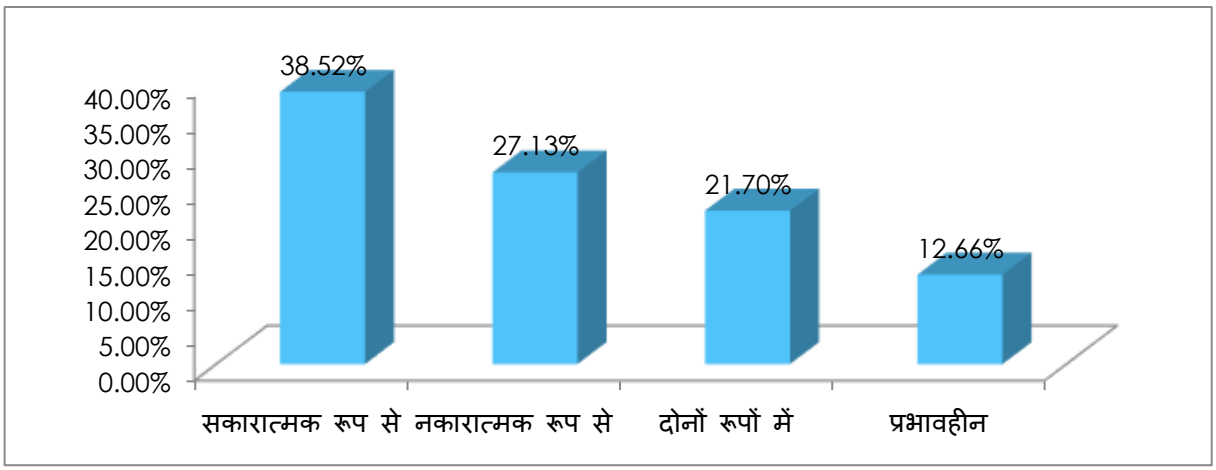

चित्र-4 युवाओं की जीवनशैली को परिवार किस रूप में प्रभावित करता है

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

तालिका-4 के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि जबलपुर जिले के पनागर एवं सिहोरा तहसीलों के युवाओं की जीवनशैली पर उनके परिवार का प्रभाव किस प्रकार से पड़ता है। इस संबंध में युवाओं की प्रतिक्रियाओं को चार प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया हैरू सकारात्मक रूप से, नकारात्मक रूप से, दोनों रूपों में और प्रभावहीन। इस तालिका के अनुसार, सर्वाधिक 213 युवा, जो कि कुल उत्तरदाताओं का 38.52 प्रतिशत हैं, ने बताया कि उनकी जीवनशैली पर परिवार का प्रभाव सकारात्मक रूप से पड़ता है। यह स्पष्ट करता है कि परिवार युवाओं को नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सामाजिक मर्यादा और संतुलित दिनचर्या के माध्यम से जीवन में सही दिशा देने का कार्य करता है। यह वर्ग पारिवारिक समर्थन को प्रेरणा, मार्गदर्शन और स्थायित्व का स्रोत मानता है। वहीं, 150 युवा अर्थात 27.13 प्रतिशत ने कहा कि परिवार का प्रभाव नकारात्मक रूप में पड़ता है। यह संकेत करता है कि कुछ युवाओं को पारिवारिक दबाव, परंपरागत सोच या निर्णयों में हस्तक्षेप के कारण अपनी स्वतंत्रता और आधुनिक जीवनशैली के अनुरूप चलने में बाधा महसूस होती है। 120 युवा (21.70 प्रतिशत) ने माना कि परिवार का प्रभाव दोनों रूपों मेंकृसकारात्मक और नकारात्मककृहोता है। यह वर्ग संतुलित दृष्टिकोण रखता है और मानता है कि परिवार कभी मार्गदर्शन प्रदान करता है, तो कभी प्रतिबंधात्मक या विरोधाभासी भूमिका भी निभाता है, जिससे मिश्रित अनुभव उत्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त, 70 युवा यानी 12.66 प्रतिशत ने कहा कि उनकी जीवनशैली पर परिवार का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। यह स्थिति तब उत्पन्न हो सकती है जब युवा आत्मनिर्भर हों, परिवार से दूर रहते हों, या पारिवारिक हस्तक्षेप न्यूनतम हो।

परिवार के किस सदस्य का आपकी जीवनशैली पर सबसे अधिक प्रभाव है

तालिका-5 युवाओं की जीवनशैली पर परिवार के सदस्य का प्रभाव

सदस्य का प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत दर
माता	180	32.55%
पिता	223	40.33%
भाई/बहन	70	12.66%
कोई नहीं	80	14.47%
कुल	**553**	**100**

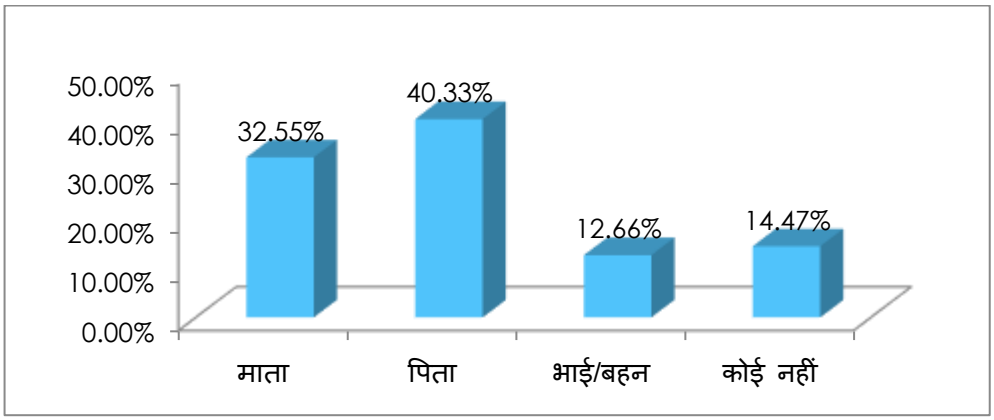

चित्र-5 युवाओं की जीवनशैली पर परिवार के सदस्य का प्रभाव

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

तालिका-5 का विश्लेषण यह दर्शाता है कि जबलपुर जिले के पनागर एवं सिहोरा तहसीलों के युवाओं की जीवनशैली पर परिवार के किन सदस्य/सदस्यों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। युवाओं ने जिन प्रमुख सदस्यों का उल्लेख किया है, वे हैंद्द माता, पिता, भाई/बहन, और कोई नहीं। इस तालिका के अनुसार, सर्वाधिक 223 युवा, जो कि कुल का 40.33 प्रतिशत हैं, ने माना कि उनकी जीवनशैली पर पिता का प्रभाव सबसे अधिक है। यह दर्शाता है कि पारिवारिक निर्णयों, अनुशासन, सामाजिक दिशा-निर्देश, आर्थिक प्रबंधन तथा जीवन के आदर्श तय करने में पिता की भूमिका प्रभावशाली बनी हुई है। यह स्थिति पारंपरिक परिवार व्यवस्था में पिता के मार्गदर्शक और नियंत्रणकारी स्थान की पुष्टि करती है। दूसरे स्थान पर 180 युवा यानी 32.55 प्रतिशत ने बताया कि माता का प्रभाव उनकी जीवनशैली पर प्रमुख रूप से पड़ता है। यह इस बात का संकेत है कि माताएँ न केवल घरेलू परिवेश में, बल्कि भावनात्मक, नैतिक और व्यवहारिक विकास में भी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। विशेषतः जीवनशैली से संबंधित आदतें, जैसे खान-पान, रहन-सहन, आचरण और संस्कारों में मातृ भूमिका स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। 70 युवाओं (12.66 प्रतिशत) ने कहा कि उनकी जीवनशैली पर भाई या बहन का प्रभाव है। यह प्रभाव सामान्यतः समवयस्क या समीप आयु के भाई-बहनों के माध्यम से आता है, जो परामर्श, व्यवहार, फैशन, तकनीकी आदतों या सामाजिक गतिविधियों में मार्गदर्शक बनते हैं। वहीं 80 युवा अर्थात 14.47 प्रतिशत ने बताया कि उनकी जीवनशैली पर परिवार के किसी भी सदस्य का कोई प्रभाव नहीं है। यह वर्ग संभवतः स्वतंत्र सोच वाला है, आत्मनिर्भरता को महत्व देता है या परिवार से भावनात्मक दूरी का अनुभव करता है। यह उत्तर सामाजिक बदलाव, पीढ़ीगत मतभेद या व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति हो सकता है।

परिकल्पना परीक्षण

एच1. पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।

तालिका 6 एच1 के लिए टी-परीक्षण परिणाम - पनागर और सिहोरा तहसीलों में युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार का प्रभाव

क्षेत्र	उत्तरदाताओं की संख्या (एन)	माध्य स्कोर	मानक विचलन (एसडी)	प्रेक्षित टी-मान	प्रभावी आकार (कोहेन डी)
पनागर तहसील	275	73.42	11.18	5.88	0.57
सिहोरा तहसील	278	67.89	10.03		

एच1 परिकल्पना यह मानती है कि पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इस परिकल्पना की पुष्टि या खंडन के लिए तालिका 4.42 में टी-परीक्षण के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं। तालिका के अनुसार, पनागर तहसील के 275 उत्तरदाताओं का

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

माध्य स्कोर 73.42 तथा मानक विचलन 11.18 है, जबकि सिहोरा तहसील के 278 उत्तरदाताओं का माध्य स्कोर 67.89 और मानक विचलन 10.03 प्राप्त हुआ है। यह आंकड़ा यह संकेत करता है कि पनागर क्षेत्र के युवा अपनी जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव को अधिक महसूस करते हैं या उनके पारिवारिक परिवेश की भूमिका अधिक प्रभावशाली है। प्रेक्षित टी-मान 5.88 है, जो कि सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि दोनों तहसीलों के युवाओं के बीच पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव में वास्तविक अंतर मौजूद है। इसके अतिरिक्त, कोहेन डी का मान 0.57 है, जो मध्यम से अधिक प्रभाव आकार को सूचित करता है। यह दर्शाता है कि यह अंतर केवल सांख्यिकीय नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। इन परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पनागर और सिहोरा तहसीलों के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया है। अतः एच 1 परिकल्पना, जो कहती है कि कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है, और इसके विपरीत वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है कि दोनों क्षेत्रों के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार का प्रभाव भिन्न है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पनागर एवं सिहोरा तहसील के युवाओं की जीवनशैली पर पारिवारिक व्यवहार का प्रभाव अत्यंत गहन और बहुआयामी है। परिवार युवाओं के मूल्य, आदतें, निर्णय क्षमता, सामाजिक आचरण, स्वास्थ्य और करियर दिशा का मूल आधार है। अध्ययन यह दर्शाता है कि जहाँ सहयोगात्मक, संवादपूर्ण और प्रोत्साहन देने वाला पारिवारिक वातावरण युवाओं में सकारात्मक जीवनशैली का विकास करता है, वहीं उपेक्षा, अत्यधिक नियंत्रण, विवादपूर्ण वातावरण या भावनात्मक दूरी उनके जीवन में तनाव, विचलन और अस्वस्थ आदतों को जन्म दे सकते हैं। इन क्षेत्रों के युवाओं में परिवार अभी भी मार्गदर्शक, प्रेरक और संरक्षक की भूमिका निभाता है, इसलिए पारिवारिक व्यवहार का संतुलित, संवेदनशील और जागरूक होना अत्यंत आवश्यक है। यदि परिवार युवाओं को विश्वास, सहयोग, स्वतंत्रता और भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करे, तो वे न केवल स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली विकसित करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के सक्रिय, जिम्मेदार और आत्मनिर्भर नागरिक भी बनते हैं। यह शोध पारिवारिक–सामाजिक संवेदनशीलता बढ़ाने और युवा विकास नीतियों को मजबूत करने हेतु महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रियांगिका, एम. (2022). पर्यटन पर बदलती जीवनशैली: रत्नापुरा जिले का विशेष संदर्भ। ट्राइवैलेंट। जर्नल ऑफ आर्कियोलॉजी टूरिज्म एंड एंथ्रोपोलॉजी। 3(1):10-19.
2. मेन्सिकोव्स, व्लादिमीर और लाव्रीनेंको, ओल्गा और वानकेविच, एलेना (2017)। रोज़गार के संदर्भ में युवाओं की गतिशील जीवनशैली। विश्वविद्यालय आर्थिक बुलेटिन। 12(5), 188-196।
3. सौगन्या, डीपी (2016). उपभोक्ता खरीद व्यवहार पर एफएमसीजी प्रचार का प्रभाव. आईजेईएमआर. 6(10).

International Conference on Interdisciplinary Research in Science, Management, Engineering and Humanities (ICIRSMEH - 2025)
26th October, 2025, Bhubaneshwar, Odisha, India.

4. शहज़ादी, के., अहमद-उर-रहमान, एम., चीमा, ए.एम., और अहकाम, ए. (2016)। बाध्यकारी खरीदारी व्यवहार पर व्यक्तित्व लक्षणों का प्रभाव: आवेगी खरीदारी की मध्यस्थ भूमिका। जर्नल ऑफ सर्विस साइंस एंड मैनेजमेंट, 9(05), 416।
5. अंजू वर्गीस, और अनित बान, ए. (2016). युवा भारतीयों की बचत और जीवनशैली. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (आईजेएसआर). 5(4), 1431-1433.
6. वोहरा, जे., और सोनी, पी. (2016). खुदरा दुकानों में बच्चों के खाद्य खरीदारी व्यवहार के आयाम को समझना. ब्रिटिश फूड जर्नल, 118(2), 450-463.
7. अमोस, पेट्रीसिया (2015). हिप-लाइफ़ संगीतकारों की जीवनशैली और घाना के युवाओं पर इसका प्रभाव. एडवांसेज़ इन सोशल साइंसेज़ रिसर्च जर्नल. 2(8). 65-74.
8. जियोवन्नी, एस., जू, वाई., और थॉमस, जे. (2015). लक्ज़री फ़ैशन उपभोग और जेनरेशन वाई के उपभोक्ता: स्वयं, ब्रांड चेतना और उपभोग प्रेरणाएँ. जर्नल ऑफ़ फ़ैशन मार्केटिंग एंड मैनेजमेंट, 19(1), 22-40.
9. त्रेहान, ए. और बब्बर, एम. (2015). उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव और भारत में लक्ज़री एक्सेसरीज़ व्यवसाय पर उनका प्रभाव. एशियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च. 6(1), 160-166.
10. श्रीवास्तव, ए. (2015). भारतीय किशोरों की उपभोक्ता निर्णय लेने की शैलियाँ. समकालीन प्रबंधन अनुसंधान, 11(4), 385.
11. सिंह, आर., और नायक, जे.के. (2015). भारत में किशोरों में जीवन के तनाव और बाध्यकारी खरीदारी व्यवहार: लिंग का मध्यम प्रभाव. साउथ एशियन जर्नल ऑफ ग्लोबल बिज़नेस रिसर्च, 4(2), 251-274.